ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-126-128**,YEAR-2015

स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता

❑ **डॉ0 रीना सिंह**

सारांश– *महिलायें समाज का अभिन्न व महत्वपूर्ण अंग है तथा उनका योगदान समाज की समुन्नति व समृद्धि में पुरूषों से किसी भी प्रकार में कम नही है। महिला और पुरूष एक दूसरे के पूरक है जब दोनों मिलकर समाज के लिए कार्य करेंगे तभी स्वस्थ और प्रगतिशील समाज का विकास होगा। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान अनेक ऐसे दृष्टान्त मिलते है जिससे स्पष्ट होता है कि स्त्रियों में साहस, अक्रमकता और नेतृत्व की योग्यता का परिचय दिया।*

कई अवसरों पर ऐतिहासिक संघर्श में स्त्रियों ने पुरूषों के समकक्ष साथियों के रूप में काम किया। वे राजनीतिक सक्रियता में समकक्ष भूमिकाओं के लिए तत्पर थीं यह इस बात से स्पष्ट है कि 1917 में भारतीय स्त्रियों का एक प्रतिनिधि मण्डल माण्टेस्क्यू से स्त्रियों के मताधिकार की मांग के सम्बन्ध में मिला है। इससे यह प्रमाणित होता है कि भरतीय स्त्रियों में पर्याप्त राजनीतिक चेतना थी तथा वे राजनीतिक जीवन में सहभागिता, संगठनात्मक व्यवस्था में योगदान और चुनाव की प्रक्रिया में सक्रियता चाहती थी।[1]

गांधी और नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने स्त्रियों की राजनीतिक सक्रियता को सुदृढ़ और प्रेरित किया। स्त्रियों की दृष्टि से गांधी और नेहरू का प्रेरणादायक योगदान रहा है। यह निराशाजनक स्थिति थी कि इन राष्ट्रीय स्तर के नेताओं का उत्साह अन्य पुरूष नेताओं में नहीं पाया गया। जब गॉधी और नेहरू का उत्साह अन्य पुरूष नेताओं में पाया गया। जब गॉधी ने धरसन के ऐतिहासिक मार्च के नेतृत्व के लिए सरोजनी नायडू को नेतृत्व के लिए चुना जाये किन्तु गॉधी स्वयं अपने निर्णय पर अटल रहे। सरोजनी नायडू ने स्वयं उद्घोष किया कि ''अब समय आ गया है जब स्त्रियां पुरूष साथियों के साथ देश के स्वतंत्रता संघर्ष में नेतृत्व और बलिदान करने में बराबर भूमिका चाहती है''।[2]

राष्ट्रीय संघर्ष में भागीदारी के फलस्वरूप महिलाओं के व्यक्तित्व के विकास में बाधक शताब्दियों पुराने बन्धनों में स्पष्ट रूप से शिथिलता आई। संघर्ष की विभिन्न प्रक्रियाओं जैसे धरना देना, जुलूसों में चलना, जेल जाना, पुलिस बर्बरता का सामना करना इत्यादि में भागीदारी से जिस आत्मविश्वास जागरूकता साहस का संचार हुआ उससे महिलाओं को स्वयं की शक्ति का एहसास हुआ। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए उनके संघर्ष ने महिलओं के दिलो दिमाग में पितृसत्तात्मक अधिपत्य से स्वयं की मुक्ति के लिये प्रयास करने की इच्छा शक्ति को बल मिला।[3]

स्त्रियों ने संघर्ष के समय कई अवसरों पर पहल की, साथ ही उन्होंने संगठन सम्बन्धी प्रश्नों में रूचि ली। महिला आन्दोलन राजनीतिक अधिकारों की दृष्टि से सक्रिय था। इस अदन्दोलन के दूसरे चरण में अर्थात 1931 के निर्वाचन में महिलायें बहुत बड़ी संख्या में चुनी गयी ये महिलायें निर्वाचित हुई थी उनमें कांग्रेस की महिला सदस्या अधिक संख्या में थी 1937 के चुनाव में कुछ महिलायें निर्वाचित हुई जिनमें 41 स्थान महिलाओं के लिये आरक्षित किये गये थे। इन निर्वाचित महिलाओं में हंसा मेहता, लक्ष्मी, अम्मल, दुर्गाबाई आदि प्रमुख थी। विजय लक्ष्मी पण्डित संयुक्त प्रान्त से चुनी गयी तथा स्थानीय स्वायत्त तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य की मंत्री बनाई गयी इस तरह से राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने की दृश्टि से महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ जिससे समान अधिकारों की दृश्टि से आंशिक सफलता प्राप्त की।[4]

असि0 प्रो0 – समाजशास्त्र विभाग, चौ0 चरण सिंह पी0जी0 कालेज, हैवरा, इटावा, (उ0प्र0) भारत

भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ–साथ महिलाओं के आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ जिसने राजनीतिक अधिकारों के साथ–साथ सामाजिक कानूनों में सुधार करने की मांग की। 1934 से 1954 के बीच भारत महिला संगठनों द्वारा हिन्दुओं के व्यक्तिगत कानून में सुधार करने का तीव्र प्रयास किये गये। महिला आन्दोलन को प्रथम चरण में हिन्दू कानून का सहिताकरण करना था। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन तथा भारतीय राश्ट्रीय महिला परिशद् इन दोनों महिला संगठन ने मिलकर सरकारी अधिकारियों के सम्मुख एक प्रस्ताव रख जिसमें हिन्दू कानून में सुधार करने के लिए किसी भी समिति के गठन हेतु कानून बनाने पर बल दिया गया था।

1939–40 में कांग्रेस के अधिवेशन के बाद सुभाषचन्द्र बोस की अध्यक्षता में राश्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया। इस समिति की 29 उपसमितियां थी जिसमें एक समिति नियोजित अर्थव्यवस्था में स्त्रियों की भूमिका के बारे में विचार करने वाली समिति थी इस समिति की अधिकांश महिलाएं महिला संगठनों की सदस्या थी तथा अलग–अलग गुटों की प्रतिनिधि थी। इस समिति में लक्ष्मीबाई राजवाडे, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पण्डित, हंसा मेहता, ताराबाई, मानक लाल, प्रेमचन्द्र, बेगमशाह नबाज तथा बेगम हमीद आदि थी। ये सभी महिलायें स्त्री पुरूष समानाधिकार गुट थी।[5]

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के राजनीतिक परिवेश की एक और दुखद स्थिति यह थी कि स्त्रियों को प्रायः समय–समय पर निर्णय लेने वाली संस्थाओं से अलग रखा गया था। संगठनात्मक प्रक्रिया में अनुभवी बंगाल की स्त्रियों को निर्णय प्रक्रिया से वंचित रहने का अहसास अत्यधिक कचोटता था यहॉ तक कि 1931 में वे प्रथम महिला कांग्रेस के संगठन की बात सोचने लगी। हर जिले से महिला प्रतिनिधियों को इस तरह के उद्देश्य से आमंत्रित किया गया। सरला देवी चौधरानी जिन्हें ''भारत में राजनीति और महिलावाद की वरिष्ठ महिला माना जाता है, उन्हें महिलाओं के प्रति कांग्रेस के रवैये की तीखी आलोचना की। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आन्दोलन में बराबर की भागीदारी होते हुए भी क्या महिलाओं के केवल अलंकारपूर्ण भाषणों से संतुष्ट रहना पड़ेगा ? वे समितियों तथा काउन्सिलों में नियुक्त क्यों नही की जाती ? स्त्रियों की निराशा सरला देवी के इस कथन से व्यक्त है। ''स्त्रियों को कानून तोड़ने की प्रक्रिया के लिए चुना जाता है किन्तु कानून निर्माण की प्रक्रिया में स्थान नही दिया जाता।[6]

1936–37 में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति जो कि कांग्रेस संगठन की शीर्ष संस्था है, उसमें किसी भी महिला सदस्य को नही लिया गया। महिलाओं ने इसका व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सशक्त विरोध किया। अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेन्स ने इसका कड़ा विरोध किया और कहा – ''कमला देवी चटोपाध्याय को भी इस समिति में नही लिया गया। यह भारतीय नारीत्व के प्रति अन्याय है। सामन्यतया किसी भी केन्द्रीय समिति में महिला प्रतिनिधि नगण्य है पुरूष यह सोंचते हैं कि स्त्रियां इस योग्य नही है उच्च उत्तादायित्व का निर्वाह करें। अन्य समाजवादी पुरूषों को ले सकते है किन्तु समाजवादी महिला नेता कमला देवी को नही। अब किसी भी स्त्री को आवेदन करने की आवश्यकता नही। इस प्रकार के समूह में स्त्रियों को ऐसे राजनीतिक समूह और संगठन भी सम्मिलित किये गये जिनकी राजनीतिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका थी।[7]

अपनी अलग पहचासन और स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए महिलाओं के प्रयास से यह स्पष्ट है कि वे अपने बात को कहने और अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए उत्सुक थी। वे केवल पुरूषों द्वारा दिखाये गये रास्ते की मौन अनुयायी नही थी, अपितु उन्होंनें साहसी और निर्णायक भूमिकाओं की मांग स्वयं की थी। अगर हम महिलाओं के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आन्दोलन में उनकी भूमिका का अवलोकन करें तो यह स्पष्ट है कि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया से महिलाओं में आत्मविश्वास का संचार हुआ एवं उनकी स्वयं के सम्बन्ध में सोच बदली। एक अन्य स्तर पर राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए संघर्श करते हुए, स्त्रियों का ध्यान पितृ सत्तात्मक अधिपत्य के विरूद्ध संघर्ष करने में नई चेतना जगाने में सहायक हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. फ्रैंक मोरेस, ''इन पोलिटिकल लाइफ'', तारा अली बेग (संपा), विमेन ऑफ इण्डिया, पब्लिकेशन डिवीजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग, भारत सराकार, 1998, पृष्ठ सं0 75

2. जिराल्डिन फोर्बस, ''दि पोलिटिक्स ऑफ रेस्पेक्टोविलिटी'', डी0ए0लो0, (संपा), वही, पृष्ठ सं0 76

3. जिराल्डिन फोर्बस, ''वोट्स फॉर विमेन'', वीणा मजूमदार (संपा) सिम्बलस् आफ पावर, एलाइड पब्लिशरस, नई दिल्ली 1979, पृष्ठ सं0 12

4. आप्टे प्रभा, भारतीय समाज में नारी, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर पृष्ठ सं0 199।

5. वही पृष्ठ सं0 201

6.''कन्सट्रक्टिव प्रोग्रेम ''इट्स मिनिंग एण्ड प्लेस,''क्लेक्टिड, वर्क्स आफ महात्मा गांधी, खण्ड 75 पृश्ठ सं0 155 पुष्पा जोशी (संपा), गांधी आफ विमेन कलेक्शन आफ महात्मा गांधीस्, स्पीचीस एण्ड राइटिंग नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद और सेन्टर फार विमेन डेवलपमेन्ट स्टडीस, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ सं0 223

7.जिराल्डिन फोबर्स, ''द पोलिटिक्स आफ रेस्पेम्क्टेबिलिटि, डी0ए0लो0 (संपा), वही पृष्ठ सं0 83–84

*****